अध्याय 29.
सम्यग्दर्शन

1. **सम्यग्दर्शन किसे कहते हैं ?**
   सच्चे देव, शास्त्र और गुरु का तीन मूढ़ता रहित, आठ मद से रहित और आठ अङ्ग सहित श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन है।
2. **चार अनुयोगों में सम्यग्दर्शन की क्या परिभाषा है ?**
   प्रथमानुयोग - सच्चे देव-शास्त्र-गुरु पर श्रद्धान करना।
   करणानुयोग - सात प्रकृतियों के उपशम, क्षय, क्षयोपशम से होने वाले श्रद्धा रूप परिणाम।
   चरणानुयोग - प्रशम, संवेग, अनुकम्पा और आस्तिक्य का भाव होना।
   द्रव्यानुयोग - तत्त्वार्थ का श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन है।
3. **सम्यग्दर्शन के कितने भेद हैं ?**
   सम्यग्दर्शन के दो भेद हैं -1. सराग सम्यग्दर्शन 2. वीतराग सम्यग्दर्शन।
   1. **सराग सम्यग्दर्शन**

   अ. धर्मानुराग सहित सम्यग्दर्शन सराग सम्यग्दर्शन है।
   ब. प्रशम, संवेग, अनुकम्पा औरआस्तिक्य आदि की अभिव्यक्ति इसका मुख्य लक्षण है।
   (श्री धवला, पु. 1/4/152)

   1. **प्रशम** - रागादि की तीव्रता का न होना।
   2. **संवेग** - संसार से भयभीत होना।
   3. **अनुकम्पा** - प्राणी मात्र में मैत्रीभाव रखना।
   4. **आस्तिक्य** -''जीवादि पदार्थ हैं'' ऐसी बुद्धि का होना।

   2. **वीतराग सम्यग्दर्शन** -राग रहित सम्यग्दर्शन वीतराग सम्यग्दर्शन कहलाता है, यह वीतराग चारित्र का अविनाभावी है। यहाँ श्रद्धान और चारित्र में एकता होती है। उदाहरण-रामचन्द्रजी सम्यग्दृष्टि थे। एक तरफ जब सीताजी का हरण हुआ तो वह सीताजी को खोजते हैं, वृक्ष, नदी आदि से भी पूछते हैं कि मेरी सीता कहाँ है ? दूसरी तरफ जब रामचन्द्रजी मुनि अवस्था में शुद्धोपयोग में लीन हो जाते हैं और सीता जी का जीव विचार करता है कि इनके साथ हमारा अनेक भवों का साथ रहा है, यदि ये ऐसे ध्यान में लीन रहे तो मुझसे पहले मोक्ष चले जाएंगे। अत: सम्यग्दृष्टि सीताजी का जीव मुनि रामचन्द्रजी के ऊपर उपसर्ग करता है पर रामचन्द्रजी ध्यान से च्युत नहीं हुए। तो विचार कीजिए कि पहले भी रामचन्द्रजी सम्यग्दृष्टि थे और मुनि अवस्था में भी सम्यग्दृष्टि थे, फिर अन्तर क्या रहा तो पहले उनके सम्यक्त्व के साथ राग था आस्था और आचरण में भेद था, इसलिए सीताजी को खोज रहे थे। अत: सराग सम्यग्दर्शन था। जब मुनि थे तो आस्था और आचरण में एकता आ गई थी, वीतराग सम्यग्दृष्टि बन गए। इससे सीताजी के जीव द्वारा किए गए उपसर्ग को भी सहन करते रहे और केवलज्ञान को प्राप्त किया।

4. व्यवहार सम्यग्दर्शन और निश्चय सम्यग्दर्शन किसे कहते हैं ?

शुद्ध जीव आदि तत्त्वार्थों का श्रद्धानरूप सरागसम्यक्त्व व्यवहार सम्यक्त्व जानना चाहिए और वीतराग चारित्र के बिना नहीं होने वाला वीतराग सम्यक्त्व निश्चय सम्यक्त्व जानना चाहिए।

5. सम्यग्दर्शन के उत्पत्ति की अपेक्षा कितने भेद हैं ?

सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति की अपेक्षा दो भेद हैं –

1. **निसर्गज सम्यग्दर्शन** – जो पर के उपदेश के बिना जिनबिम्ब दर्शन, वेदना, जिनमहिमा दर्शन आदि से उत्पन्न होता है, उसे निसर्गज सम्यग्दर्शन कहते हैं।
2. **अधिगमज सम्यग्दर्शन**–जो गुरु आदि पर के उपदेश से उत्पन्न होता है, वह अधिगमज सम्यग्दर्शन है।

6. निसर्गज और अधिगमज में अंतरंग निमित्त क्या है ?

दोनों ही सम्यक्त्व में मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्प्रकृति और अनन्तानुबंधी चतुष्क इन सात प्रकृतियों का उपशम, क्षय व क्षयोपशम होना, अंतरङ्ग निमित्त है। (तत्त्वार्थसूत्र, 1/3)

7. अंतरङ्ग निमित्त की अपेक्षा से सम्यग्दर्शन के कितने भेद हैं ?

तीन भेद हैं–1. उपशम सम्यग्दर्शन 2. क्षयोपशम सम्यग्दर्शन 3. क्षायिक सम्यग्दर्शन।

8. उपशम सम्यग्दर्शन के कितने भेद हैं ?

दो भेद हैं। 1. प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन 2. द्वितीयोपशम सम्यग्दर्शन।

1. **प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन**[1]–मिथ्यादृष्टि जीव को, जो दर्शन मोहनीय की तीन प्रकृति अर्थात् मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्प्रकृति एवं अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया और लोभ इन सात प्रकृतियों के उपशम से जो सम्यग्दर्शन होता है, उसे प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन कहते हैं। यह चारों गतियों के जीवों को हो सकता है।
2. **द्वितीयोपशम सम्यग्दर्शन**–क्षयोपशम सम्यग्दर्शन के अनंतर जो उपशम सम्यग्दर्शन होता है, उसे द्वितीयोपशम सम्यग्दर्शन कहते हैं। यह भी सात प्रकृतियों के उपशम से होता है। सप्तम गुणस्थानवर्ती मुनि यदि उपशम श्रेणी चढ़े तब उसको क्षायिक सम्यग्दर्शन या द्वितीयोपशम सम्यग्दर्शन आवश्यक होता है।

   विशेष– अन्य आचार्यों के मतानुसार द्वितीयोपशम सम्यग्दर्शन चतुर्थ गुणस्थान से सप्तम गुणस्थानवर्ती क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि प्राप्त करता है। (श्री धवला, 1/27/211, कार्तिकेयानुप्रेक्षा, 484 टीका, मूलाचार, 205 टीका)

9. सर्वप्रथम जीव कौन-सा सम्यग्दर्शन प्राप्त करता है ?

सर्वप्रथम जीव प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन प्राप्त करता है।

10. प्रथमोपशम एवं द्वितीयोपशम सम्यग्दर्शन प्राप्त करने के स्वामी कौन हैं ?

प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन – संज्ञी, पञ्चेन्द्रिय, पर्याप्त, गर्भजन्म और उपपाद जन्म वाले मिथ्यादृष्टि ही प्राप्त करते हैं। संज्ञी पञ्चेन्द्रिय सम्मूर्च्छन जन्म वाले प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

द्वितीयोपशम सम्यग्दर्शन –इसे क्षयोपशम सम्यग्दर्शन वाले मुनि या 4 से 7 गुणस्थान वाले क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि कर्मभूमि के मनुष्य ही प्राप्त कर सकते हैं। भोगभूमि के प्राप्त नहीं कर सकते।

---

1. अनादि मिथ्यादृष्टि तो पाँच प्रकृतियों का उपशम करता है एवं सादि मिथ्यादृष्टि पाँच, छः या सात प्रकृतियों का उपशम करता है।

11. प्रथमोपशम एवं द्वितीयोपशम सम्यग्र्शन में क्या अंतर है ?

निम्नलिखित अंतर हैं –

प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन	द्वितीयोपशम सम्यग्दर्शन
1. धर्म का प्रारम्भ इससे ही होता है।	1. यह धर्म प्रारम्भ होने के बाद ही होता है।
2. यह चारों गतियों के जीवों को होता है।	2. यह मात्र साधु को होता है या 4 से 7 वें गुणस्थानवर्ती मनुष्यों को होता है।
3. इसमें गुणस्थान 4 से 7 तक होते हैं।	3. इसमें 4 से 11 गुणस्थान तक होते हैं।
4. किसी भी गति की अपर्याप्त अवस्था में नहीं रहता है।	4. मात्र देवगति की अपर्याप्त अवस्था में रह सकता है।
5. यह मिथ्यादृष्टि प्राप्त करता है।	5. यह क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि प्राप्त करता है।
6. इसमें मरण नहीं होता है।	6. इसमें मरण हो सकता है।
7. यह अर्धपुद्गल परावर्तन काल में असंख्यात बार हो सकता है।	7. यह एक भव में दो बार तथा संसार चक्र में कुल चार बार हो सकता है।
8. एक बार प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन होने के बाद पुनः प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन असंख्यात वर्ष के बाद ही हो सकता है।	8. यह अन्तर्मुहूर्त बाद पुनः हो सकता है।
9. अन्तर्मुहूर्त होने पर भी इसका काल कम है।	9. इसका काल प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन के काल से संख्यात गुणा अधिक है।
10. इसमें त्रिकरण परिणामों की शुद्धि हीन है।	10. इसमें प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन की अपेक्षा त्रिकरण परिणामों की शुद्धि अनन्तगुणी अधिक है।

12. क्षयोपशम सम्यग्दर्शन किसे कहते हैं ?

अनन्तानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, मिथ्यात्व व सम्यग्मिथ्यात्व इन 6 प्रकृतियों के उदयाभावी क्षय व उपशम से तथा सम्यक्प्रकृति के उदय में जो सम्यग्दर्शन होता है, उसे क्षयोपशम सम्यग्दर्शन कहते हैं।

13. क्षयोपशम सम्यग्दर्शन प्राप्त करने के स्वामी कौन-कौन हैं ?

चारों गतियों वाले संज्ञी, पञ्चेन्द्रिय, पर्याप्त, गर्भजन्म, उपपाद जन्म एवं सम्मूर्च्छन जन्म वाले मिथ्यादृष्टि प्राप्त करते हैं। प्रथमोपशम, द्वितीयोपशम सम्यग्दृष्टि एवं सम्यग्मिथ्यादृष्टि भी प्राप्त करते हैं।

14. क्षायिक सम्यग्दर्शन किसे कहते हैं ?

सात प्रकृतियों के क्षय (नाश) से जो सम्यग्दर्शन होता है, उसे क्षायिक सम्यग्दर्शन कहते हैं।

15. क्षायिक सम्यग्दर्शन प्राप्त कौन कर सकता है ?

मात्र कर्मभूमि का मनुष्य क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि केवली, श्रुतकेवली के पादमूल में प्राप्त करता है।

16. यदि क्षायिक सम्यग्दर्शन, मनुष्य प्राप्त करता है, तो चारों गतियों में क्षायिक सम्यग्दृष्टि कैसे पाए जाते हैं ?

जिस मनुष्य ने पहले नरकायु, तिर्यञ्चायु या मनुष्यायु का बंध कर लिया है और बाद में क्षायिकसम्यग्दर्शन प्राप्त किया है, वह मरण कर प्रथम नरक में ही जाएगा, भोगभूमि का तिर्यञ्च या मनुष्य होगा। जिसने देवायु का बंध किया है, या किसी भी आयु का बंध नहीं किया है, तो वह नियम से देवगति में ही जाएगा और वैमानिक ही होगा। इस प्रकार चारों गतियों में क्षायिक सम्यग्दृष्टि पाए जाते हैं। (र. क. श्रा., 35)

17. क्षायिक सम्यग्दृष्टि अधिक-से-अधिक कितने भवों में मोक्ष जा सकता है ?

चार भवों में। पहला मनुष्य (जिसमें प्राप्त किया था,) दूसरा भोगभूमि का तिर्यञ्च या मनुष्य, तीसरा देवगति, चौथा कर्मभूमि का मनुष्य होकर मोक्ष प्राप्त कर लेगा।

18. तीनों सम्यग्दर्शनों का काल कितना है ?

सम्यग्दर्शन	**जघन्यकाल**	**उत्कृष्टकाल**
प्रथमोपशम	अन्तर्मुहूर्त	अन्तर्मुहूर्त
द्वितीयोपशम	अन्तर्मुहूर्त	अन्तर्मुहूर्त
क्षयोपशम	अन्तर्मुहूर्त	66 सागर
क्षायिक	हमेशा (सादि अनन्त) (होने के बाद छूटता नहीं)	हमेशा (सादि अनन्त) (होने के बाद छूटता नहीं)

19. तीन सम्यग्दर्शन में कितने सराग एवं कितने वीतराग सम्यग्दर्शन हैं ?

क्षयोपशम सम्यग्दर्शन तो सराग सम्यग्दर्शन ही है, शेष दो सराग, वीतराग दोनों हैं।

20. तीनों सम्यग्दर्शनों में कितने निसर्गज एवं कितने अधिगमज हैं ?

तीनों सम्यग्दर्शन निसर्गज भी हैं एवं अधिगमज भी हैं।

21. क्षायिक सम्यग्दर्शन तो केवली, श्रुतकेवली के पादमूल में होता है, अतः अधिगमज हुआ। निसर्गज कैसे हुआ ?

दूसरे और तीसरे नरक से आकर जो जीव तीर्थङ्कर होते हैं, उनके लिए क्षायिक सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में परोपदेश की आवश्यकता नहीं होती है, किन्तु परोपदेश के बिना ही उनके क्षायिक सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है, अतः यहाँ क्षायिक सम्यग्दर्शन निसर्गज हुआ।

22. सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में अन्य हेतु क्या हैं ?

अन्य हेतु निम्नलिखित हैं -

1. जाति स्मरण – पूर्व जन्मों की स्मृति।
2. धर्मश्रवण – धर्म उपदेश का सुनना।
3. जिन बिम्ब दर्शन – जिनबिम्ब दर्शन से।
   सम्मेदशिखरजी, ऊर्जयन्तजी, चम्पापुरजी, पावापुरजी एवं लब्धि सम्पन्न ऋषियों के दर्शन भी जिनबिम्ब दर्शन में ही गर्भित हैं।
4. वेदनानुभव – तीव्र वेदना होने से।
5. देवर्द्धि दर्शन – अपने से अधिक ऋद्धि अन्य देवों के पास देखकर के।
6. जिनमहिमा दर्शन – तीर्थङ्करों के पञ्चकल्याणक के दर्शन से।

23. उपरोक्त छः हेतुओं में से किस गति में किन-किन हेतुओं से सम्यग्दर्शन उत्पन्न होता है ?

नरकगति में - जाति स्मरण, धर्मश्रवण (तीसरी पृथ्वी तक) और वेदनानुभव से।

तिर्यञ्चगति व मनुष्यगति में -जाति स्मरण, धर्मश्रवण और जिनबिम्ब दर्शन से।

विशेष - जिन बिम्ब दर्शन में जिनमहिमा भी गर्भित है।

देवगति में-जाति स्मरण, देवर्द्धिदर्शन (12 वें स्वर्ग तक), धर्मश्रवण, जिनमहिमा दर्शन (16 वें स्वर्ग तक)।

नवग्रैवेयक में -जाति स्मरण और धर्मश्रवण से।

नवअनुदिश एवं पञ्च अनुत्तरों में -सम्यग्दृष्टि ही रहते हैं। (राजवार्तिक, 2/3/2)

भोगभूमि में- जाति स्मरण और धर्मश्रवण से। (देवों के द्वारा प्रतिबोधित करने से एवं चारण ऋद्धिधारी मुनि के उपदेश से)

24. दस प्रकार के सम्यग्दर्शन कौन-कौन से होते हैं ?

1. **आज्ञा सम्यग्दर्शन** -वीतराग भगवान् की आज्ञा से ही जो तत्त्व श्रद्धान होता है, वह आज्ञा सम्यग्दर्शन है।
2. **मार्ग सम्यग्दर्शन** - ग्रन्थ श्रवण के बिना जो कल्याणकारी मोक्षमार्ग का श्रद्धान होता है, उसे मार्ग सम्यग्दर्शन कहते हैं।
3. **उपदेश सम्यग्दर्शन** - 63 शलाका पुरुषों की जीवनी को सुनकर जो तत्त्व श्रद्धान उत्पन्न होता है, उसे उपदेश सम्यग्दर्शन कहते हैं।
4. **सूत्र सम्यग्दर्शन** - मुनियों की चर्या को बताने वाले ग्रन्थों को सुनकर जो श्रद्धान होता है, उसे सूत्र सम्यग्दर्शन कहते हैं।
5. **बीज सम्यग्दर्शन** - बीज पदों के श्रवण से उत्पन्न श्रद्धान को बीज सम्यग्दर्शन कहते हैं।
6. **संक्षेप सम्यग्दर्शन** - जो जीवादि पदार्थों के स्वरूप को संक्षेप से ही जान कर तत्त्व श्रद्धान को प्राप्त हुआ है, उसे संक्षेप सम्यग्दर्शन कहते हैं।
7. **विस्तार सम्यग्दर्शन** - जो भव्य जीव 12 अङ्गों को सुनकर तत्त्व श्रद्धानी हो जाता है, उसे विस्तार सम्यग्दर्शन कहते हैं।
8. **अर्थ सम्यग्दर्शन** - वचन विस्तार के बिना केवल अर्थ ग्रहण से जिन्हें सम्यग्दर्शन हुआ है, वह

अर्थ सम्यग्दर्शन है।

9. **अवगाढ़ सम्यग्दर्शन** - श्रुतकेवली का सम्यग्दर्शन अवगाढ़ सम्यग्दर्शन कहलाता है।
10. **परमावगाढ़ सम्यग्दर्शन** - केवली का सम्यग्दर्शन परमावगाढ़ सम्यग्दर्शन कहलाता है। (रा. वा., 3/36)

25. सम्यग्दर्शन के 25 दोष कौन-कौन से हैं ?

3 मूढ़ता, 8 मद, 6 अनायतन और 8 शंकादि दोष (8 अङ्गों से उलटे दोष) ये 25 दोष सम्यग्दर्शन के हैं। (द्रव्यसंग्रह, 41 की टीका)

26. मूढ़ता किसे कहते हैं एवं कौन-कौन सी होती हैं ?

सम्यक्त्व में दोष उत्पन्न करने वाले विवेक रहित कार्य को मूढ़ता कहते हैं।

1. **लोक मूढ़ता** - धर्म बुद्धि से नदियों व समुद्रों में स्नान करना, बालू का ढेर लगाना, पर्वत से गिरना, अग्नि में जलना आदि लोक मूढ़ता है।
2. **देव मूढ़ता** - आशा-तृष्णा के वशीभूत होकर वांछित फल की प्राप्ति की अभिलाषा से रागी-द्वेषी देवी-देवताओं की पूजा करना देव मूढ़ता है।
3. **गुरु मूढ़ता** - आरम्भ, परिग्रह, हिंसा, भय से युक्त और संसार में डुबाने वाले कार्यों में लीन साधुओं की पूजा, सत्कार करना गुरु मूढ़ता है।

27. मद किसे कहते हैं एवं कितने होते हैं ?

अहंकार, गर्व, घमण्ड करने को मद कहते हैं। ये आठ प्रकार के होते हैं।

1. **ज्ञानमद** - मुझे तो इतना ज्ञान है कि मैं बता सकता हूँ कि श्री धवला, श्री जयधवला जैसे महान् ग्रन्थों के कौन से पृष्ठ पर क्या लिखा है, किन्तु इनको तो ये भी नहीं मालूम कि एकेन्द्रिय जीव किस गति में आते हैं, ऐसा कहना ज्ञानमद है।
2. **पूजामद** - मेरी पूजा, मेरा सम्मान तो प्रत्येक घर में होता है, यहाँ तक कि विदेशों में भी होता है एवं आपका सम्मान तो नगर क्या घर में भी नहीं होता है। ऐसा कहना पूजामद है।
3. **कुलमद**- मेरा जन्म तो उस कुल में हुआ है, जहाँ अनेक मुनि हो गए, अनेक आर्यिकाएँ हो चुकी हैं, किन्तु तुम्हारे कुल में तो कोई रात्रिभोजन का भी त्यागी नहीं हुआ है, ऐसा कहना कुलमद है।
4. **जातिमद** - मेरी माता तो उस घर में जन्मी है, जहाँ सदाचार का सदैव पालन होता है, एवं तुम्हारी माता तो उस घर में जन्मी है, जहाँ सदाचार का थोड़ा भी पालन नहीं होता है, ऐसा कहना जातिमद है।
5. **बलमद** - मेरे पास इतना बल है कि मैं सौ-सौ व्यक्तियों से युद्ध में जीत सकता हूँ एवं तुम्हारे पास तो इतना भी बल नहीं है कि तुम एक मक्खी से भी जीत सको, ऐसा कहना बलमद है।
6. **ऋद्धिमद** - मेरे पास अनेक प्रकार की ऋद्धियाँ हैं, जहाँ-जहाँ मेरे चरण पड़ जाते हैं, वहाँ से रोग, दुर्भिक्ष, महामारी आदि भाग जाते हैं एवं आपके पास तो कोई भी ऋद्धि नहीं है, ऐसा कहना ऋद्धिमद है। धन मद भी ऋद्धिमद में गर्भित है।
7. **तपमद** - मैं बहुत बड़ा तपस्वी हूँ, हर माह में कम-से-कम दस उपवास कर लेता हूँ लेकिन आप रोज-रोज आहार करने जाते हैं, ऐसा कहना तपमद है।
8. **रूपमद**- मैं बहुत रूपवान हूँ, सुंदर हूँ बिना क्रीम, पावडर के भी कामदेव के समान लगता हूँ एवं

आप तो बिल्कुल अष्टावक्र एवं काले हैं, ऐसा कहना रूपमद है।

28. अनायतन किसे कहते हैं ?

आयतन का अर्थ होता है स्थान। यहाँ सम्यग्दर्शन का प्रकरण होने से आयतन का अर्थ धर्म का स्थान। इससे विपरीत अधर्म के स्थान को अनायतन कहते हैं।

अनायतन छः होते हैं। कुगुरु, कुगुरु सेवक, कुदेव, कुदेव सेवक, कुधर्म और कुधर्म सेवक। इनकी मन, वचन, काय से प्रशंसा, भक्ति, सेवा नहीं करना। यदि प्रशंसा, भक्ति, सेवा करते हैं तो यह सम्यग्दर्शन में दोष है।

29. शंकादि आठ दोष कौन-कौन से हैं ?

1. **शंका** - जिनेन्द्र देव द्वारा कथित तत्त्वों में विश्वास नहीं करना।
2. **कांक्षा** - धर्म के सेवन से, सांसारिक भोगों की वांछा करना।
3. **विचिकित्सा** - रत्नत्रयधारी मुनियों के शरीर को देखकर ग्लानि करना।
4. **मूढ़दृष्टि** - मिथ्यामार्ग और मिथ्यामार्गियों की मन से सहमति करना, वचन से प्रशंसा करना एवं काय से सेवा करना।
5. **अनुपगूहन** - धर्मात्माओं के दोषों को प्रकट करना।
6. **अस्थितिकरण** - धर्म से चलायमान लोगों को पुनः धर्म में स्थित नहीं करना।
7. **अवात्सल्य** - साधर्मी भाइयों से प्रेम न कर उनकी निंदा करना।
8. **अप्रभावना** - अपने खोटे आचरण से जिनशासन की अप्रभावना करना।

नोट-ये शंकादि,सम्यग्दर्शन के 8 दोष हैं, इसके विपरीत निःशंकित, निःकांक्षित, निर्विचिकित्सा, अमूढ़दृष्टि, उपगूहन, स्थितिकरण, वात्सल्य और प्रभावना, ये सम्यग्दर्शन के 8 अङ्ग होते हैं।

30. सम्यग्दर्शन के आठ गुण कौन-कौन से होते हैं ?

सम्यग्दर्शन के आठ गुण इस प्रकार हैं-

1. **संवेग** - संसार के दुःखों से नित्य डरते रहना अथवा धर्म के प्रति अनुराग रखना ।
2. **निर्वेग** - भोगों में अनासक्ति।
3. **निंदा** - अपने दोषों की निंदा करना।
4. **गर्हा** - गुरु के समीप अपने दोषों को प्रकट करना।
5. **उपशम** - क्रोधादि विकारों को शांत करना।
6. **भक्ति** - पञ्च परमेष्ठी में अनुराग।
7. **वात्सल्य** - साधर्मियों के प्रति प्रीति भाव रखना।
8. **अनुकम्पा** - सभी प्राणियों पर दया भाव रखना। (चारित्रसार श्रावकाचार, 7)

31. सम्यग्दृष्टि जीव कहाँ-कहाँ उत्पन्न नहीं होता है ?

सम्यग्दृष्टि जीव नरक, तिर्यञ्च, भवनत्रिक देव, नपुंसक, स्त्री पर्याय, नीचकुल, विकलाङ्ग, अल्पायु, एकेन्द्रिय, विकलचतुष्क और दरिद्रता को प्राप्त नहीं होता है।

नोट - सम्यग्दृष्टि नारकी एवं तिर्यञ्च भी होता है, जैसा कि प्रश्न 16 में कहा था।

32. सम्यग्दृष्टि क्या-क्या प्राप्त करता है ?

देवों में श्रेष्ठ पद इन्द्र, मनुष्यों में श्रेष्ठ पद चक्रवर्ती एवं तीर्थङ्कर के पद को भी प्राप्त करता है।

33. सम्यग्दृष्टि की क्या पहचान है ?

आचार्य नेमिचन्द्र जी जीवकाण्ड में कहते हैं-

मिच्छंतं वेदंतो जीवो विवरीयदंसणो होदि।
ण य धम्मं रोचेदि हु महुरं खु रसं जहा जरिदो॥ (जीवकाण्ड, 17)

अर्थ-मिथ्यात्व का अनुभव करने वाला जीव विपरीत श्रद्धान वाला होता है। जैसे-

1. पित्तज्वर से युक्त जीव को मधुर रस भी रुचिकर नहीं होता है वैसे ही मिथ्यादृष्टि जीव को यथार्थ धर्म रुचिकर नहीं होता है। अर्थात् इस गाथा से स्पष्ट हो जाता है कि धर्म जिसे अच्छा लग रहा है वह सम्यग्दृष्टि है क्योंकि मिथ्यात्व रूपी ज्वर से ग्रसित व्यक्ति के लिए धर्म अच्छा नहीं लगता है।
2. जो अपनी प्रशंसा के साथ दूसरे की निंदा नहीं करते हैं वे भी सम्यग्दृष्टि हैं क्योंकि जो अपनी प्रशंसा के साथ दूसरे की निंदा करते हैं तो नीच गोत्र का बंध होता है एवं नीच गोत्र का बंध दूसरे गुणस्थान तक ही होता है। अतः अपनी प्रशंसा के साथ पर की निंदा करने वाला सम्यग्दृष्टि नहीं हो सकता है।

34. कौन से सम्यग्दर्शन से कौन-सा सम्यग्दर्शन उत्पन्न होता है ?

प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन से क्षयोपशम सम्यग्दर्शन।
द्वितीयोपशम सम्यग्दर्शन से क्षयोपशम सम्यग्दर्शन।
क्षयोपशम सम्यग्दर्शन से द्वितीयोपशम सम्यग्दर्शन एवं क्षायिक सम्यग्दर्शन।
क्षायिक सम्यग्दर्शन से कोई भी सम्यग्दर्शन नहीं होता है।

35. सम्यग्दर्शन के पर्यायवाची नाम कौन-कौन से हैं ?

श्रद्धा, आस्था, रुचि, प्रतीति आदि।

अभ्यास

सही या गलत बताइए -

1. सीताजी का जीव जो अभी स्वर्ग में है, उसके पास क्षायिक सम्यग्दर्शन है।
2. उपशम सम्यग्दर्शन के दो भेद नहीं हैं।
3. अयोग केवली के सम्यग्दर्शन को परमावगाढ़ सम्यग्दर्शन कहते हैं।
4. शरीर शुद्धि के लिए नदी में स्नान करना लोक मूढ़ता है।
5. अपनी प्रशंसा के साथ दूसरों की निंदा करने वाला सम्यग्दृष्टि नहीं हो सकता है।

अन्यत्र खोजिए -

1. कौन से आचार्य ने कौन से ग्रन्थ में क्षायिक सम्यग्दर्शन को वीतराग सम्यग्दर्शन कहा है ?
2. जाति स्मरण से सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति किस प्रकार होती है ?
3. वेदना से सम्यग्दर्शन किस प्रकार होता है ?
4. सम्यग्दर्शन के अतिचार कौन-कौन से हैं ?
5. नपुंसक वेद, स्त्रीवेद एवं पुरुषवेद के साथ क्षायिक सम्यग्दर्शन कितनी गतियों में रहता है ?